312 P
43
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1533/1071
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 312

S/1811

891.431
B 469 B

नकल करने से पहले इज्जत और माल को सम्भालो।।

भारत माता की लताड़

प्रकाशक:- बाबू राम शास्त्री जैत पुर कलां (आगरा)

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
1931

प्रार्थना

प्रभु दीनों की सुनिये दीना नाथ ।
भारत में हाहा कार है ॥ टेक
कृषिक तो रोयें दिनरात हा ।
प्रभु देख लगान का वार। भारत में०
गौवें तो कटती गोरी फ़ौज को ।
भगवन बत्तीस लाख हजार। भारत में०
घी है चर्बी का, पानी दूध है।
जहां पे बहती थी दूधों की धार। भारत०
गोली व लाठी खाते बे गुनाह।
जिन के पास न कुछ हथियार। भारत०
न्याय धीश खुद हो स्वार्थी।
भगवन किस से करें फिर पुकार। भारत०
तू ही है रक्षक मेरा कर "स्वतन्त्र"
तूही है सच्ची मम सरकार॥
भारत में हा हा कार है।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 312
Date 7.12.71
GOVT. OF INDIA

पति को पत्नी का उपदेश और विदाई ॥

मल्हार नं० १

प्रीतम डालूं, गले में जय माल,
लड़ो जा जंग मैदान में ॥ टेक
खादी का पहनो बख्तर अंग पर।
प्रीतम अहिंसा की लो किरपान। लड़ो०
हैट पैंट सब फूंक दो।
वही रखो स्वदेशी बांकी शान। लड़ो०
मोह व ममता को सारी भूलना।
प्रीतम हरगिज न लाना इतध्यान। लड़ो०
सैयां मैं पइयां पड़ जाऊं वांल।
रख लो भारत माता का मान। लड़ो०
तोप तबर गन मैशिन सब
यह है मर्दों का स्वर्ग निशान। लड़ो०
निहत्थों पे करते वार जो
वह हैं कायर न मर्द जवान। लड़ो०
जाओ जी जाओ पिया हो विजय।
होवे भारत "स्वतंत्र" लिया जान। लड़ो०

पति का धर्म युद्ध में जाने की दृढ़ प्रतिज्ञया

मल्हार नं० २

अजी प्रिया हाथ में जाऊं रख शीश।

गांधी की प्यारी फौज़ में। टेक।

मरने की पर वाह मुझ को है नहीं।

अजी प्रिया पहिले कटाऊं निज शीश। गांधी०

मर के दिखावें अपनी आन पर।

जरा देखे वहां कोई न्याय धीश। गांधी०

यह भी क्या उन की न्याय वहादुरी

चढ़ते इक पै रिपु दस बीस। गांधी०

पीठ जो दिखाऊं धर्म युद्ध से।

प्रिया देखेगा मुझे जगदीश। गांधी०

घर में घुसूंगा रण को कर विजय।

वरना होऊं "स्वतंत्र" जग को त्याग

गांधी की प्यारी फौज में।

(वतन प्रेम दिवाना हूं ॥)

गायन नं० ३

द्रोही कह मुझे कोई, मगर नहीं द्रोह किसी से है
सिर्फ अन्याय का द्रोही, मर्द सच्चा मैं दाना हूं। टेक
इसी से चाहे मुझ को पकड़ के जंजीर में जकड़ो।
समझ में गर तुम्हारी, इस तरह मैं द्रोही दाना हूं॥
मगर यूं रुक नहीं सक्ता तुम्हारी जेल बेड़ी से।
मैं हूं तय्यार मरने को आजादी का परवाना हूं॥
मुझे जो कहते थे पागल न जाने कौन पागल है।
मैं हूं एक वीर हितैषी वतन का प्रेम दिवाना हूं॥
डराते गन मशीनों गोलियों से क्या मुझे साहब।
मैं हूं एक शेर भारत का न योरुप का ज़नाना हूं॥
अमर है आत्मा मेरी सदा "प्रताप" स्वतंत्र हूं।
तुझे मम आहें फूंकेंगी समझ एक तोपखाना हूं॥

उड़ गई सारी नज़ाकत पहनने खद्दर लगे
छिप गया झट भान भी जब बरसने खद्दर लगे
"प्रताप" (स्वतंत्र)

मल्हार नं० ४

अरी बहनों गाढ़े की प्यारी।

साडी पहिन झूलेंगी चंचल बाग में। टेक

रिम झिम तो बरसे वर्षा सोहनी।

अरी बहिनों बिजली चमकावे जाने नैन। झूलूं०

काली व प्यारी घटा छा रही।

अरी सखियो दिन की बनी है कैसी रैन। झूलें०

घरर, घुरर बादल गरजते।

अरी सखियो मोर शोर लेना चैन। झूलें०

हरी ये हरियाली आली मोहिनी।

सब सखियो पी पी पपइया बोले बैन। झूलें०

जंगी तिरंगी रस्सी ले चलें।

अरी सखियो डालें स्वतंत्र झूला बहन।

गाढ़े की साड़ी पहन झूलेंगी चंचल बाग में

(ज़रा कानून तो देखो ॥)

गायन नं० ५

कानून पे खुद आप ही चलती नही सरकार है।
फिर क्या करे पब्लिक ही कहना उन्हें बेकार है॥
यह तोड़ते कानून खुद राया को देते दोष हैं।
तांगों पे हर २ संतरी होते सदा सवार हैं॥
पीना नशा कोकीन शराबें जुर्म है कानून से।
पिकेटिंग से फिर क्यों करें वालिंटियर गिरफ़्तार हैं॥
हा छोटे २ बच्चों की मातायें ठूंसी जेल में।
वह तड़पते रोते हैं जिन का दूध ही आहार है॥
लाठियों से वार होता देवियों पर हा सितम।
अरु भर दिये चुन २ के बच्चे तूने कारा गार है॥
निहत्थे निर्दोष पर भी चलती गोली लाठियां।
यह देख लो कानून और सरकार का उपकार है॥
देश "स्वतंत्र" और तरक्की पाप है करना कहीं।
क्यों रोकते गाढ़े की टोपी यह भी क्या तलवार है

(भारत को गारत कर दिया)

मलार नं० ६

अरे फिरंगिया यही है तेरा धर्म राज

भारत को गारत कर दिया। टेक

लाखों ही बच्चे मारे नौ जवां।

अरे फिरंगिया हुई निपूती लाखों रांड़। भारत०

अनगिन्त मर वाये जरमन्न जंग में।

अरे फ़िरंगियां अपनी बचाने को लाज़। भारत०

जलियां भी वाले मारे बाग में।

अरे पापी डायर बना था यम राज। भारत०

नारियां भी पिटती तेरे राज में।

अरे फिरंगियां इसी राज पे था नाज़। भारत०

नन्हे भी नन्हे बच्चे रो रहे।

अरे फिरंगियां जेलों में मायें उनकी आज। भारत०

माल हुनर व ज़र को खेंच कर।

अरे फिरंगियां भर २ भेजे तूने जहाज़। भारत०

गौयें भी कटती तेरी फ़ौज में।

अरे फ़िरंगिया बत्तीस लाख अंदाज़। भारत

भारत स्वतंत्र कर के अब हटें।

अरे फिरंगिया लेके टरेंगे हम स्वराज

भारत को गारत करदिया

(गांधी टोपी पिस्तौल होगई)

गायन नं० ७

यह गांधी टोपी क्या हुई पिस्तौल होगई।
लख कर इसे सरकार डांवा डोल हो गई॥
जहां देखो वहां ही करते हैं इस बंद टोपी को
है मौत की निशानी या लाहौल हो गई॥
हम तो कभी डरते नहीं तलवार तोप से।
बेड़ी भी पहिन कहते कि रमझोल होगई॥
पर पेट में क्यों दर्द है इस गांधी कैप से।
है जादू या सरकार ही बगलोल होगई॥
क्या जुर्म इस का पहनना स्वतन्त्र होगया।
कानून भी है या कोई मखौल होगई॥

(पति से प्रार्थना)

मलार नं० ८

अजी पिया विनती करूं हर बार।

शराबां पीना छोड़दो ॥ टेक

दुनिया तो मरती कटती देश पर

तुम्हें सूझा शराब से प्यार। शराबां

हाथों से खोते बुद्धि आबरू.

पड़ गये मुंह पे ही मारे जुत्ता धार। शराबां

धन व बुद्धि की मिट्टी क्यों करो

पिया बुद्धि से करो जग उद्धार। शराबां०

पैसा भी देकर क्यों पागल बनों

ज़रा शर्म करो जी भरतार। शराबां०

थू २ हा करता जग धिक्कारता।

तुमतो पंतेहो त्योंही हा० मक्कार। शराबां०

प्रताप स्वतन्त्र सोचो जग भली

कैसे देश का हो उपकार॥

शराबां पीना छोड़ दो॥

(लगी सरकार सोचने)

गायन नं० ६

भरने लगी जब जेल लगी सरकार सोचने
भव्वा किया दस नाक में गांधी की फौज ने
गिरफ्तार कर लेजाते इत सारी जेल से
आ बैठते झट और नहीं हम पाते पहुंचने।
खाली करो अब चोर डाकू, खूनी, जेल से
लगी नया झट रास्ता सरकार खोजने।
हथियार सब अजमा लिये यह और भी सही
कानून को खुद तोड लगी पब्लिक को कोसने
उडवा के सारी धज्जियां अबउतरि जुल्म पर
जैसे स्वतंत्र खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचने।

यह चलरही तहरीक जो सब जानता संसार है
कि रक्त वर्षा होरही जेलों में सावन बहार है
"प्रताप" (स्वतंत्र)

गायन नं० १०

(वतर्ज - म० गांधी ने हिला दियो संसार)

अरे- बंद नहीं होनी यह आज़ादी की जंग ॥ टेक

तू बंद चाहे अखबार करा या इधर उधर के तार करा
चुन २ लीडर गिरफ़ार करा सब रचले अपने ढंग ॥ बंद
चाहे करले पलटन फौज जमा या नभ पे हवाई जहाज घुमा
गन मशीन पुलिस का रोब रमा रंगले आखरी रंग ॥ बंद०
तू पिकेटिंग से गिरफ़ार करा अरु सत्याग्रहियों से जेलभरा
गुंडों से मिल तकरार करा । खूनों से बहादे गंगा ॥ बंद०
कदे समझौते की बात करे इत चुपके २ घात करे ।
दिन की चौड़े में रात करे । तब ही कह दुनिया नंग ॥ बंद०
बिन ग्यारह शर्तें के माने नहीं कौन है तू तुझको जाने
ज़िद अपनी स्वतन्त्र की ठाने । तेरा लौटेगा औरंग ॥

अरे- बंद नहीं होनी यह आजादी की जंग ॥

रसिया नं० ११

चर्खा बन गया चक्र सुदर्शन मारे दुशमन का मैदान। टेक
तीन महीने में ही रिपु की लगी बिगड़ने शान।
अभी तो युद्ध आरम्भ किया है निकल गई क्यूं जान। चर्खा०
घर २ में चर्खा चलवादो गाओ नित गुण गान।
कभी लुटेरा नहीं टिकेगा भैय्या यह महमान। चर्खा०
मानचैस्टर लंकाशायर ने-छोड़ा खाना पान।
भूल गये आराम ऐश को- होगई बन्द जवान। चर्खा०
सात समुद्र तक चर्खे की- झनक रही है तान।
योरुप के सारे नर नारि- हो गये दंग हैरान॥ चर्खा०
तोप तबर गन मशीन फौज सब डट रहे टिड्डी समान।
उन के मुकाबले में एक चर्खा मारे सबका मान। चर्खा०
चर्खा चर्ख है चक्र सुदर्शन च्यौहान वीर समझान
प्रताप स्वतंत्र करके दिखादे यही हिन्दुस्तान। चर्खा०

गायन नं० १२

मेरी गांधी करेगा सुनाई रे (चल) मत सुने फिरंगियां। टेक
तेरी करे न अब कोई पुछाई रे (चल) मत सुने फिरंगियां॥
दिन थोले बस्तर बांध ले रे फ़िरंगियां॥
तेरी गाड़ी की टेम हो गई रे (चल) मत सुने फिरंगियां॥
दुखी फरयादी को दे गांधी का तू ताना।
तूने अच्छी यह थौंस चमाई रे (चल) मत सुने फिरंगियां॥
चौड़े धाड़े घृत बिकता चर्बी और घास का।
कभी इधर नजर न उठाई रे (चल) मत सुने फिरंगियां॥
पड़ती है डकेती चोरी छुरे बाज़ी रात दिन।
तेरी पुलिस को रह नींद छाई रे (चल) मत सुने फिरंगियां॥
प्रताप स्वतंत्र चिन हाय २ करें लोग।
तब गांधी ने करी चढाई रे (चल) मत सुने फिरंगियां॥

उड़ गई सारी नजाकत पहिनने खद्दर लगे।
छिप गया झट भान भी नव बरसने बद्दल लगे॥
"प्रताप" (स्वतंत्र)

गायन नं० १३

गोल मेज़ कांनफ्रेंस में सब गोल माल है।
यह जंग ठंडा करने की निराली चाल है॥
जो सायेमन जी देगये वह देगी गोल मेज़।
है और धरा क्या देने को तलवार ढाल है॥
दब जाय इस वक्त. तो यह जंग आजादी।
बस यही बिछाये जाने को धोके का जाल है॥
साइमन की गोद बैठे थे उम्मीद वार जो।
आकर उन्हें क्या कर गई कमीशन निहाल है
धोका ही धोका दे के किया नाश देश का।
अजी चुप रहो बस जान ली तुम्हारी चाल है
करके "स्वतंत्र" छूटेंगे हम देश भारत को।
जो देते किया करते नहीं लम्बी टाल है॥

नक़ालों को नोटिस

आज कल हमारी पुस्तकों की अधिक विक्री देख कर बहुत से नक़ाल पैदा हो गये हैं किसी २ महाशय ने तो यहां तक हिम्मत कर डाली है कि हमारे टायटिल पेज की नक़ल कर के एक दो भजन चुरा कर मिलते जुलते नाम रखकर जनता को धोका देने का उद्योग किया पब्लिक ऐसे लोगों से सावधान रहे। हमारे ट्रेक्टों पर प्रकाशक पं० बाबूराम शर्म्मा का नाम देख कर खरीदें। हमारे ट्रेक्टों का सरकार ने भी आदर किया है और "बहन सत्यवती का जेल संदेश" आदि कई पुस्तकों को जब्त कर लिया है नक़ालों को सूचित करता हूं कि इस पुस्तक के किसी भजन को उलट पलट कर छापने का उद्योग न करें वरना उन्हें लाभ के बदले हानि होगी हां जितनी पुस्तकें चाहियें मुझसे मंगा सक्ते हैं॥ दाम २) सैंकड़ा लिये जावेंगे॥ निवेदक:- पं० बाबू राम शर्म्मा जैतपुर कलां॥

प्रताप गीतांजलि =)॥ क्रांती का संदेश) भारत और अंगरेज १॥)
गांधी की मशीन गन) अंग्रेजों की बोलती बंद) आज़ाद हिन्दुस्तान उर्दू =)
फ़ैशन का झंडा) क्रांती का सिंहनाद) भारतीय प्रजा ।)
इंकलाब की चिंगारियां =)॥ सत्याग्रह का अवतार) अत्याचार का परिणाम =)
क्रांती पुष्पांजली =)॥ अंग्रेजों की टायेंफिस) झांसी की रानी बड़ी ॥)

पता: १- पं० बाबू राम शर्म्मा जैतपुर कलां ज़िला आगरा
२- बाबू राम शर्म्मा C/o भारत बुक एजंसी नई सड़क देहली